इतिहास 30/07/2020

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या		उत्तर
1	A	सुतकोटदा - हड़प्पा संस्कृति का समुद्रतटीय नगर - आधुनिक गुजरात राज्य में स्थित - विशेषता - एक नगर दुर्ग की उपस्थिति
1	B	शतपथ ब्राह्मण - उत्तरवैदिक काल के लिखे गये ब्राह्मण ग्रंथों में से एक है। - इसमें यज्ञ संबंधी अनुष्ठान का वर्णन मिलता है।
1	C	चार आर्य सत्य - बौद्ध धर्म का मूल सिद्धांत इन्हीं 4 आर्य सत्यों पर आधारित है ये हैं - दुख, दुख समुदाय, दुख निरोध, और दुख निरोध मार्ग
1	D	इक्ष्वाकु वंश - सातवाहन वंश के अवशेषों में स्थापित हुआ (कृष्णा-गुंटूर क्षेत्र) → प्रायद्वीप के पूर्वी भाग में विस्तार था → राजधानी - नागार्जुनकोंडा → इस वंश के पुरुष ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे जबकि महिलाएँ बौद्ध धर्म अनुयायी थीं।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

1 E — नागभट्ट I - गुर्जर प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक
- इसने अपनी राजधानी मालवा में अवन्ति को बनाया (8वीं शताब्दी)

1 F — तुजुक-ए-जहाँगीरी — जहाँगीर की आत्मकथा
- इसे पूरा करने का श्रेय - मौतबिंद खाँ
→ आयोध्या मामले में उच्चतम न्यायालय ने इस संदर्भ बनाया।

1 G — अमीर अली बरीद - बहमनी राज्य के समाप्ति के बाद अवशेषों में स्थापित स्वतंत्र बरीदशाही वंश का संस्थापक

1 H. — दीवान-ए-कोही → मुहम्मद-बिन-तुगलक द्वारा स्थापित कृषि विभाग
→ किसानों को ब्याजमुक्त ऋण की सहायता हेतु।

1 I — सुगौली की संधि - आंग्ल-नेपाल युद्ध की समाप्ति के बाद अंग्रेजों और गोरखों के बीच
- मार्च 1816 में सम्पन्न → अंग्रेजों के पक्ष में
- इसके तहत अंग्रेजी राज्य व नेपाल की सीमा तय की गई।

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

1 J

देवबंद आंदोलन → मुस्लिम रूढ़िवादी उलेमाओं द्वारा शुरू हुआ यह धार्मिक आंदोलन था।
→ 2 प्रमुख उद्देश्य थे
① कुरान व हदीस की शिक्षाओं का प्रसार
② गैर मुस्लिमों के विरुद्ध जिहाद

1 K

~~क्रांतिकारी~~ मदन लाल ढींगरा
— स्वदेशी आंदोलन के दौरान व बाद में भी विदेशों में सक्रिय क्रांतिकारी आंदोलनकारी नेतृत्व
→ कर्जन वायली की हत्या के जुर्म में 1909 में फाँसी की सजा मिली

1 L

20 फरवरी 1947 एटली की घोषणा →
1947 के तत्कालीन ब्रिटिश प्र. मंत्री एटली ने घोषणा की – कि "30 जून 1948 तक भारत को उसकी सम्प्रभु शक्तियों का हस्तांतरण कर दिया जायेगा"

Scanned with CamScanner

1 M

मार्कोपोलो → इटली का यात्री
→ 13वीं सदी में रेशम मार्ग से भारत की यात्रा की।
→ पुस्तक - "द बुक ऑफ सर मार्कोपोलो"
→ इसने दक्षिण भारत में काकतीय वंश की रानी रुद्रमा देवी के शासन काल में भ्रमण किया।

1 N

"स्पिरिट ऑफ लॉ" - फ्रांसीसी क्रांति के समय लिखी गई पुस्तक का नाम
→ लेखक - मॉन्टेस्क्यू
→ विशेष - शक्ति पृथक्करण के सिद्धांत पर बल दिया गया है।

1 O

लॉयाड जॉर्ज → प्रथम विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री
→ पेरिस शांति सम्मेलन में अमेरिका व फ्रांस के राष्ट्राध्यक्षों के साथ प्रमुख भूमिका निभाई।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

2 A

सिंधु सभ्यता के आर्थिक जीवन की जानकारी हमें वहाँ के व्यापारिक तानेबाने की झलक से मिलती है।

सिंधु सभ्यता की अर्थव्यवस्था में व्यापार का अत्यधिक महत्व है हालांकि सिंधुवासी व्यापार वस्तुविनिमय द्वारा ही आदान-प्रदान करते थे।

आर्थिक गतिविधियाँ

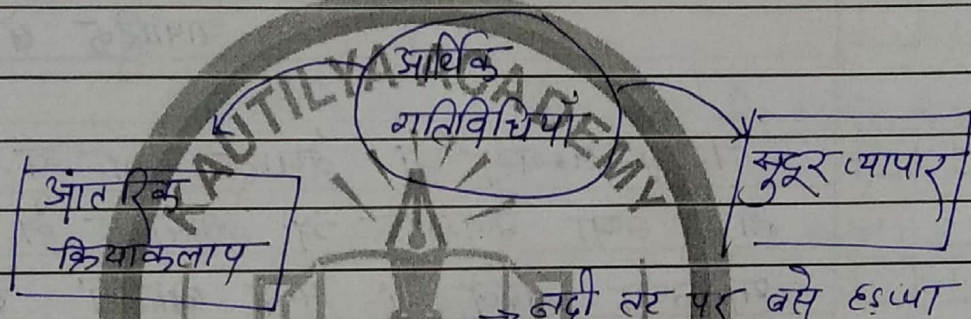

आंतरिक क्रियाकलाप	सुदूर व्यापार
→ सिंधु क्षेत्र में पत्थर, धातु, हड्डी का व्यापार प्रचलित था	→ नदी तट पर बसे हड़प्पा व मोहनजोदड़ो तथा अन्य समुद्रीय नगर इस बात के संकेत देते हैं कि जलमार्ग से कई व्यापारिक गतिविधियाँ सम्पन्न हुई
→ बुनकरों की उपस्थिति के साक्ष्य मिले हैं	
→ हड़प्पाई लोग मुहरें, स्वरूप मणि बनाने में निपुण थे।	→ हड़प्पाई लोगों ने लाजवर्द मणि का व्यापार सुदूर देशों तक चलाया।
→ सभ्यता में कुशल शिल्पी समुदाय का महत्वपूर्ण स्थान था	→ मेसोपोटामियाई के अभिलेख में मध्यवर्ती व्यापारिक केन्द्रों का उल्लेख मिलता है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

→ कारीगरों द्वारा मणि निर्माण का कार्य अत्यंत दक्षता के साथ किया जाता था जो समाज वर्ग की प्रतिष्ठा का प्रतीक होती थी।

→ हड़प्पा की मुहरें मेसोपोटामिया की खुदाई से मिली।

→ अफगानिस्तान के जहरे मध्य एशिया से व्यापारिक संबंध थे

सिंधु सभ्यता में तैयार माल व अनाज को नाँव तथा बैलगाड़ी में लादकर ले जाया जाता था तथा बदले में अन्य वस्तुएँ कई धातुओं की प्राप्ति होती थी।

आर्थिक जीवन में समाज के प्रत्येक वर्ग ~~की अलग-अलग कार्यशैली~~ जैसे - बुनकर, स्वर्णकार, कारीगर, कुम्हार, राजगीरी आदि की भिन्नता सिंधु सभ्यता की समृद्धि का प्रतीक रही।

KAUTILYA ACADEMY

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

2 B

वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल में आते-आते लगभग 500 वर्षों के अंतराल में धार्मिक जीवन में अनेकानेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

* यज्ञ उत्तरवैदिक संस्कृति का मूल था। यद्यपि यज्ञ का प्रचलन वैदिक काल में भी था लेकिन यज्ञ रीति में महान अंतर उत्तर वैदिक काल में देखने को मिला। अब यज्ञ के साथ अनेक अनुष्ठान तथा मंत्रविधियाँ प्रचलित हो गई, जिनका सृजन पुरोहितों ने किया, जो ब्राह्मण कहलाने लगे। ये ब्राह्मण धार्मिक ज्ञान पर अपना एकाधिकार समझने लगे और धनलोलुपता के कारण कई अनुष्ठानों को प्रचलित किया।

इसके अलावा यज्ञ विधि में पशुबलि बड़े पैमाने पर हुई तथा यज्ञों की प्रकृति सार्वजनिक एवं निजी दोनों प्रकार की हो गई।

* वर्ण विभाजन के चलते सभी वर्णों के अपने अलग देवता हो गये
जैसे- पूषन - शूद्रों के देवता।

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

देव आराधना की रीति में महान अंतर देखने को मिलता है उत्तर वैदिक काल में।

* उत्तर वैदिक काल में देवताओं की प्रमुखता पहले की तरह नहीं रही। "प्रजापति" को अब सर्वोच्च स्थान दिया गया।

पशुओं के देवता "रुद्र" तथा पालक एवं रक्षक देवता के रूप में "विष्णु" को स्थान मिला।

उत्तर वैदिक कालीन धार्मिक जीवन उस समय की सामाजिक व्यवस्था को अधिक परिलक्षित करता है। ~~जिसके~~ ब्राह्मणों की सर्वोच्चता एवं समाज में उनके प्रमुख को धर्म के बल पर स्थान प्राप्त किया।

Scanned with CamScanner

2 C

भारतीय इतिहास मे ~~सबसे~~ अशोक पहला राजा है जिसने भारी संख्या मे अभिलेखो को स्थापित कर उनके माध्यम से अपनी प्रजा को संबोधित किया।

अभिलेखों का महत्व

- अशोक के जीवन के अधिकांश पहलू अभिलेखो मे प्रकट होते है
  - जैसे →
    1) अशोक द्वारा बौद्धो को अपार दान
    2) कलिंग युद्ध मे अशोक का हृदय परिवर्तन (13वाँ)
    3) "देवानाम् प्रियदर्शी" का नाम जो अशोक खुद को कहता था।
- अभिलेखो की अवस्थिति भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रचलित भाषा एवं लिपि की जानकारी देती है।
- विदेशों मे स्थित अभिलेख (श्रीलंका, अफगानिस्तान) - अशोक की अंतर्राष्ट्रीय नीति एवं सांस्कृतिक विजय की कहानी कहते है।
- कर का स्वरूप - अनाज की शक्ल में वसूला जाता था, ऐसा पता चलता है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

अशोक के अभिलेख अहिंसा एवं सहिष्णुता की नीति को प्रसारित करने वाले जीवित प्रतिमान के रूप में मौजूद है।

स्वयं अभिलेखों की बनावट सिद्ध करती है कि अशोक के राज्य में शिल्पी (कुशल) मौजूद थे।

ये अभिलेख अशोक के राज्यक्षेत्र की सीमा निर्धारित करते हैं। अभिलेखों से अशोककालीन समाज, राजव्यवस्था, धार्मिक उपदेश और सबसे महत्वपूर्ण अंतर्निहित व आंतरिक नीति, भौगोलिक विस्तार की जानकारी मिलती है।

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

2 D

सामंतवाद एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें सरकार में भूस्वामी अभिजात वर्ग का बोलबाला रहता है।

विशेषतायें :—

- वंशानुगत शासन व्यवस्था
- भारतीय राजपूताना शासन, सामंतवाद से साम्य रखती है।
- कृषि दासत्व की प्रथा जिसमें दासों को किसी प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती थी
- यह एक विकेन्द्रीकृत सैनिक प्रणाली है, जिसमें सामंती व्यवस्था का प्रतीक एक "घोड़े पर सवार योद्धा" होता है।
- इसमें राजा एक शक्तिशाली सामंत सरदार होता है, जो अपने मातहतों (वफादारों) से ईमान की शपथ लेता था।
- मातहतों की समस्त जागीरों पर राजा का स्वामित्व होता था।

Scanned with CamScanner

2 E

राजेंद्र चोल, चोल साम्राज्य का एक प्रतापी राजा था जिसका शासन 1014 ई. से लेकर 1044 ई. तक रहा।

इस दौरान राजेंद्र चोल ने कई राजनीतिक, सैन्य, कूटनीतिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियाँ हासिल की।

प्रमुख उपलब्धियां

① अपने पिता राजा राजराज की साम्राज्य विस्तारवादी नीति का अनुसरण करते हुए सम्पूर्ण श्रीलंका पर विजय प्राप्त की।

② पड़ोसी राज्यों चेर व पाण्ड्यदेश को अपने साम्राज्य में मिलाया

③ गंगा नदी को पार करके उत्तर में विजय पताका लहराई और इस स्मृति में राजेंद्र प्रथम ने "गंगईकोंड चोल" की उपाधि धारण की

④ कावेरी नदी के मुहाने पर गंगईकोंडचोलपुरम नामक महानगर बसाया जिसे चोल राजधानी बना गया।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

(5) राजेन्द्र चोल के समय बंगाल की रणनीति में हैसियत "चोल झील" के समान हो गई थी जिसका कारण चोलों की एक शक्तिशाली नौसेना का होना था।

(6) चीन के साथ व्यापारिक व कूटनीतिक संबंध स्थापित करने में राजेन्द्र चोल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

(7) चीनी संबंधों को विस्तार देने हेतु राजेन्द्र चोल ने श्री विजय साम्राज्य (मलय प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा आदि द्वीप) पर आक्रमण ~~किया~~ कर जीत हासिल की।

(8) राजेन्द्र चोल ने मंदिर निर्माण कार्य भी कराये जिसमें शिव व विष्णु के हिन्दू मंदिर शामिल हैं।

इन सभी उपलब्धियों पर ध्यान देते हुये हम कह सकते हैं कि राजेन्द्र चोल की साम्राज्य विस्तार नीति अधिक महत्वपूर्ण रही।

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या 2 I

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

लॉर्ड विलियम बैंटिक, 1828 में बंगाल का गवर्नर जनरल बनकर भारत आया और 1833 के चार्टर अधिनियम के तहत बैंटिक को भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया।

बैंटिक द्वारा भारतीय व्यवस्था में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक एवं कूटनीतिक कार्य किये गये।

① प्रशासनिक कार्य :

- 1835 के शिक्षा संबंधी प्रस्ताव में अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने की घोषणा।
- मैसूर, कुर्ग, तथा मध्य कछार का कंपनी राज्य में विलय
- राजस्व आयुक्तो की नियुक्ति

ये सभी प्रशासनिक कार्य बैंटिक ने कंपनी के हित में किये।

Scanned with CamScanner

(2) कूटनीतिक कार्य —:

रणजीत सिंह के साथ निरंतर मित्रता की संधि

भारतीयों के हित में कुछ सामाजिक कार्यों के लिये बैंटिक का महत्वपूर्ण योगदान है।

(3) सामाजिक कार्य —:

(1) सती प्रथा पर रोक (1829)
(राजा राममोहन राय के प्रोत्साहन से)

(2) ठगी प्रथा का अंत (1830)

(3) बालिका शिशु वध पर रोक

(4) नर बलि का निषेध

(5) धर्म परिवर्तन की सुविधा दिलाई

(6) समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर बल

(7) दास प्रथा का अंत (1832 ई.)

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

2 J

ब्रिटिश काल में जमींदारी व्यवस्था को स्थायी रूप से लागू करने का श्रेय लॉर्ड कार्नवालिस को है। यह 1790 में बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उ. कर्नाटक तथा बनारस प्रांत में प्रचलित थी।

जमींदारी लागू करने के कारण —

⇒ पूर्व में प्रचलित लगान व्यवस्था से सरकारी लगान की अनिश्चितता

⇒ वार्षिक रूप से ठेके की झंझट से मुक्ति

विशेषतायें —

⇒ जमींदारों से स्थायी समझौता जिससे जमींदार भूमि के स्थायी मालिक बन गये।

⇒ भूमि पर पैतृक व हस्तांतरणीय अधिकार जमींदारों के पास

⇒ जमींदार को भूमि से तब तक पृथक नहीं किया जा सकता था जब तक कि वह भूराजस्व की नियत रकम जमा करता रहे।

Scanned with CamScanner

⇒ भूराजस्व की रकम का 10/11 भाग कंपनी को देना होता था 1/11 भाग स्वयं जमींदार रखते थे।

* सबसे महत्वपूर्ण बात कि तय की गई रकम से अधिक वसूली करने पर अतिरिक्त वसूली रखने का अधिकार जमींदारों का था। जिस कारण किसानों का अधिक शोषण किया गया।

⇒ सरकार का किसानों से कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं रह गया।

उद्देश्य — ब्रिटिशों द्वारा जमींदारी के स्थायित्व से मुख्य 2 लाभ हुये -

① अंग्रेजी सत्ता को भारत पर शासन करने के लिये जमींदारों के वर्ग को सामाजिक आधार के रूप में उपयोगी बनाना

② कंपनी की आय में वृद्धि।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

2 K

औद्योगिक क्रांति से तात्पर्य है - तकनीकी उन्नति के कारण उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन।

औद्योगिक क्रांति के दौरान एवं परिणामस्वरूप जो आधारभूत परिवर्तन हुये उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को काफी हद तक प्रभावित किया इसी के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी इस क्रांति ने सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव डाले।

सामाजिक क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव -:

① सामाजिक कुरीतियों व रूढ़िवादिता में कमी -

चूँकि उद्योगों में सभी जाति सम्प्रदाय के लोगों को साथ मिलकर काम करना पड़ता था इसलिये छुआछूत, जाति प्रथा आदि कुरीतियों से समाज को मुक्ति मिलने लगी।

② आधुनिक शिक्षा का विकास -

उद्योगों में तकनीकी व व्यवसायिक ज्ञान की आवश्यकता पर जोर देते हुए नये पाठ्यक्रमों की शुरुआत हुई। नये शैक्षणिक संस्थान खोले गये।

Scanned with CamScanner

③ बराबरी का हक :-

उद्योगों में कार्यबल की अत्यधिक आवश्यकता के चलते महिलाओं को भी रोजगार प्रदान किया गया जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया और महिला सशक्तिकरण को बल मिला।

④ जीवन स्तर में सुधार — स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में सुधार से मृत्यु दर में कमी आयी तथा आर्थिक संपन्नता से मानव जीवन सुखपूर्ण हुआ।

औद्योगिक क्रांति के नकारात्मक प्रभाव :—

① समाज में नये प्रकार की वर्ग विभाजन से तनाव में वृद्धि हुई। सामाजिक तनाव में यह वृद्धि पूँजीपति वर्ग, मध्यम वर्ग, तथा श्रमिक वर्ग के बीच आर्थिक खाई के कारण उत्पन्न हुई।

② भावनात्मक संबंधों में गिरावट — श्रमिकों को एक जगह से दूसरी जगह पलायन तथा एक ही उद्योग में विभिन्न अपरिचितों के साथ कार्य करने से लोगों के बीच प्रेम व परस्पर सहयोग की बजाय प्रतिस्पर्धी संबंध स्थापित हुये।

Scanned with CamScanner

(3) संयुक्त परिवार का विघटन — औद्योगीकरण के चलते लोगों ने अपने एकल परिवार को लेकर शहरों की ओर प्रवास किया। जिसने संयुक्त परिवार प्रणाली को गहरा आघात पहुँचा

(4) बालश्रम में वृद्धि — औद्योगीकरण से उपजी बालश्रम की समस्या से आज भी हम जूझ रहे हैं।

(5) शहरी जीवन में गिरावट — श्रमिकों की आबादी वाले शहरी क्षेत्र में आवास, भोजन, पेयजल स्वास्थ्य सेवाओं की आपूर्ति में मुश्किलें हुई; तथा सुरक्षा के अभाव में आपराधिक प्रवृत्तियों में वृद्धि हुई।

इस प्रकार औद्योगिक क्रांति जितनी लाभदायक हमें उन्नत बनाने में रही उतनी ही नई समस्याओं को जन्म देने वाली रही।

वर्तमान में जरूरत इस बात की है कि औद्योगिक क्रांति से उपजी नकारात्मकताओं की समाप्ति की दिशा में कार्य तेजी से किये जाने चाहिए।

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या: 2 L

1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति को इंग्लैण्ड की रक्तहीन क्रांति भी कहा जाता है।

इस क्रांति का महत्व इस बात से है कि इंग्लैण्ड की सत्ता परिवर्तन की यात्रा में बिना रक्त की एक बूँद बहाये ही जनता ने अपने विवेक के बल पर गौरवपूर्ण क्रांति को सम्पन्न किया।

महत्व —

① इंग्लैण्ड में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना —

क्रांति ने राजा के सर्वोपरि होने पर ऐतराज जाहिर किया और संसद के अधिनियम के अंतर्गत राजा की संप्रभुता को समाप्त किया। और संसदीय शासन प्रणाली की स्थापना की गई।

② संसद की सर्वोच्चता स्थापित —

क्रांति से पूर्व राजा ही सर्वोपरि था। परंतु क्रांति के बाद → सेना पर संसद का अधिकार हो गया। → संसद ही गृह और विदेश नीति की निर्धारक बन गई → धर्म के मामले में भी संसद उत्तरदायी हो गई।

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

③ यूरोप की राजनीति पर प्रभाव – :

यूरोप में भी संवैधानिक राजतंत्र तथा लोकतांत्रिक शासन पद्धति की स्थापना हेतु आंदोलन प्रारंभ हुये, जो अभी तक निरंकुश राजाओं की सत्ता के अधीन थे।

④ अमेरिकी क्रांति की झलक –

1688ई. की इंग्लैण्ड की इस क्रांति ने अमेरिकी उपनिवेश के लोगों में स्वतंत्रता की अलख जगा दी और बाद में अमेरिका में संघर्ष प्रारंभ हुये।

इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रांति ने यह सिद्ध किया कि जनता की सत्ता सर्वोपरि है जिसका प्रतिनिधित्व संसद करती है।

Scanned with CamScanner

2 H

शिवाजी एकमात्र ऐसा मराठा सरदार था जिसने अपने पराक्रम व साहस के बल पर दक्षिण में मुगल सत्ता के अतिक्रमण के विरुद्ध एक शक्तिशाली मराठा राज्य की स्थापना की।

प्रारंभ में मराठा अहमदनगर और बीजापुर के प्रशासन में सत्य पद पर थे। शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले और स्वयं शिवाजी ने मराठा साम्राज्य स्थापित करने की ठानी। पिता की मृत्यु के बाद से ही शिवाजी का देश विजय अभियान शुरू हो गया।

शिवाजी का योगदान –

① वास्तविक विजय का प्रारंभ शिवाजी ने 1656 ई० से किया जिसमें पूना के आसपास के क्षेत्र (राजगढ़, कोंडाना, तोरण के पहाड़ी किले), जावली राज्य तथा मवाली क्षेत्र शामिल थे

② बीजापुर को जीतने के लिये शिवाजी ने अफजल खाँ के षड़यंत्र को बड़ी चतुराई से मात दी। इस विजय से पनहाला किला, दक्षिण कोंकण और कोल्हापुर भी शिवाजी के राज्य में शामिल करने में आसानी हुई।

Scanned with CamScanner

हालाँकि पुरंदर की संधि (1665), जो जयसिंह व शिवाजी के बीच सम्पन्न हुई, ने शिवाजी को इस विजय को काफी नुकसान पहुँचाया।

बाद में 1670 ई. में शिवाजी ने पुनः अपने क्षेत्रों को वापस जीत।

③ मुगलों के प्रमुख बंदरगाह सूरत को 2 बार लूटा

④ मराठा राज्य के विस्तार हेतु शिवाजी का अंतिम अभियान कर्नाटक था।

⑤ शिवाजी ने मराठा राज्य के लिये एक ठोस शासन प्रणाली की स्थापना की जिसमें 8 मंत्री होते थे जिन्हें सामूहिक रूप से अष्टप्रधान कहा जाता है।

⑥ शिवाजी ने जमींदारी प्रथा को समाप्त किया तथा मुगल इलाकों पर "चौथ" कर लगाया।

निश्चित तौर पर शिवाजी ने मराठा राज्य को क्षेत्रीय स्वरूप प्रदान किया परंतु शिवाजी एक लोकप्रिय शासक, सुयोग्य सेनापति, चतुर कूटनीतिज्ञ के रूप में स्वयं को स्थापित किया है।

KAUTILYA ACADEMY

Scanned with CamScanner

3 A

1789 ई. में सम्पन्न हुई फ्रांस की क्रांति विश्व स्तर पर स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व का प्रसार करने वाली थी।

फ्रांसीसी क्रांति के प्रत्येक चरण में पुरातन रूढ़िवादी तथा संकीर्ण मानसिकतावादी सामाजिक व राजनीतिक तंत्र का पतन हुआ।

फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव –

इस क्रांति ने फ्रांस के साथ-साथ न केवल यूरोप पर प्रभाव डाला बल्कि सम्पूर्ण विश्व को भी प्रभावित किया।

① "स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व" का नारा दिया –

ये तीन शब्द भले ही उस समय के लिये नवीन अर्थों के रूप में स्थापित हुए परंतु आज के समय में ज्यादातर देशों की राजव्यवस्था का मूल आधार है।

② लोकतंत्र के सिद्धांत को मान्यता –

फ्रांसीसी क्रांति ने लोकतांत्रिक मूल्यों को

Scanned with CamScanner

प्रतिस्थापित किया। मानवाधिकारों की घोषणा की गई जो व्यक्ति की संप्रभु सत्ता को व्यक्त करते हैं।

③ सामंतवाद का अंत —

सामंती व्यवस्था को फ्रांसीसी क्रांति ने लगभग पूरे यूरोप में समाप्त करने का प्रयास किया।

④ राष्ट्रवाद का उदय —

क्रांति ने जनराष्ट्रवाद की भावना को प्रेरित किया। राष्ट्रवाद के फलस्वरूप ही नेपोलियन का साम्राज्यवादी विस्तार को देखा जा सका।

⑤ धर्मनिरपेक्ष राज्य की भावना पर बल —

क्रांति ने राज्य और धर्म को पृथक रूप से देखने को प्रेरित किया। धर्म को व्यक्तिगत वस्तु माना गया जो राज्य की सत्ता से पृथक होती है।

⑥ सैन्यवाद का विकास —

क्रांति ने सैनिक सेवा को नागरिकों के लिये अनिवार्य कर दिया जो आगे

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

चलकर नेपालियन के साम्राज्यवाद और प्रथम विश्व युद्ध का कारण बना।

साधारण शब्दों में फ्रांसीसी क्रांति के सकारात्मक व नकारात्मक देनें हैं। एक तरफ क्रांति ने जहाँ राष्ट्रवाद, जनतंत्रवाद जैसी नई शक्तियाँ तथा स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व की भावना को पनपने का मौका दिया, तो वहीं दूसरी ओर आधुनिक तानाशाही और सैन्यवाद को भी नींव दी।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

प्रश्न संख्या: 3 c

गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था में प्राचीन समय की अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं से कई मापनों में भिन्नता रखती है।

प्रत्येक काल की सामाजिक परिदृश्य शासक की सामाजिक प्रतिष्ठा से आधारभूत संबंध रखती है।

चूंकि गुप्त शासक वैश्य माने जाते थे इसीलिये समाज के ब्राह्मण वर्ग ने अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिये शासकों का महिमामंडन देवताओं के रूप में किया और ऐसे करने पर गुप्त शासकों ने भूमि अनुदान ब्राह्मणों को दिया।

गुप्त काल की महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि ब्राह्मण, पुरोहितों का भूस्वामी के रूप में उदय हुआ।

अन्य विशेषताएं —

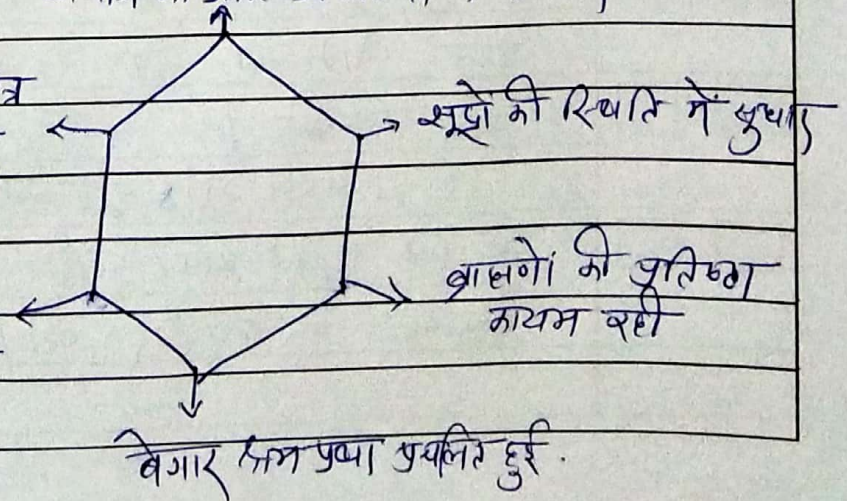

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

गुप्तकाल के दौरान भी वर्णव्यवस्था कायम रही परंतु विदेशी आगमन के कारण तथा ग्रामअनुदानों की प्रथा से क्रमशः विदेशी लोग व जनजातियों का ब्राह्मण समाज के साथ-साथ अन्य वर्णों में मिल गये जिससे प्रत्येक वर्ण विभिन्न जातियों उपजातियों में बँट गया।

ब्राह्मणों को जब भूमि अनुदान प्राप्त होने लगे तो यह किसानों के हितों के विपरीत उनके शोषण का कारण बना।

गुप्तकाल में ग्रामवासियों तथा कृषकों से सरकारी सेवा तथा अधिकारियों के लिये बेगार श्रम लिया जाता था जिसमें बिना वेतन या लाभ के बंधुआ श्रम होता है। परिणामस्वरूप किसानों की स्थिति नीचे गिर गई।

शूद्रों व स्त्रियों को रामायण, महाभारत व पुराण आदि सुनने का अधिकार तो मिला परंतु व्यक्तिगत रूप से कोई ग्रंथ देखने को नहीं मिलती।

अभी भी शूद्र तीनों वर्णों के सेवक/दास के रूप में ही था। दूसरी ओर स्त्रियों की सामाजिक गिरावट चरम पर थी।

Scanned with CamScanner

गुप्तकाल की पितृतंत्रात्मक व्यवस्था में स्त्रियों को निजी सम्पत्ति समझा जाने लगा अरि यहाँ तक कि पति के मरने पर उसकी चिता में सती होना भी इसका हिस्सा था।

उच्च वर्णों ने अधिक सम्पन्नता हासिल कर बहुपत्नी की प्रथा की असम्मानीय प्रवृत्ति को जन्म दिया।

सती प्रथा का प्राचीन काल में पहला साक्ष्य गुप्तकाल में 510 ई. का ही है।

हालाँकि स्त्री द्वारा कुछ विशेष परिस्थितियों में पुनर्विवाह की स्वतंत्रता के उदाहरण भी गुप्तकालीन समाज में परिलक्षित होते हैं।

उच्च वर्ण की स्त्रियों को इस काल में जीवन निर्वाह की स्वतंत्रता नहीं थी जबकि निम्न दो वर्णों की स्त्रियाँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र जीवन निर्वाह के साधान अपना सकती थीं।

परिणामतः गुप्तकाल की सामाजिक व्यवस्था में कोई युगान्तरकारी सामाजिक प्रोन्नति देखने को नहीं मिलती।

Scanned with CamScanner

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या: 3 D

प्राचीन भारत के प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक के अनुसार एक राजा के प्रमुख कार्य निम्नलिखित होते है -

① साम्राज्य का विस्तार
② कल्याणकारी एवं न्यायपूर्ण समाज की स्थापना
③ आंतरिक विद्रोह एवं बाह्य आक्रमणों से राज्य की सुरक्षा।

मुगल शासक अकबर, कौटिल्य की इन तीनों शर्तो पर खरे उतरते हैं। दादा बाबर व पिता हुमायूं के पदचिन्हों पर चलते हुये साम्राज्य का विस्तार उत्तर से लेकर दक्षिण के कुछ हिस्सो को छोड़कर तथा पश्चिम से लेकर गंगा के मुहाने तक किया।

सभी धर्मो व समुदायों के साथ सहिष्णुता का पालन करते हुये न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की।

उज्बेकों, मिर्जाओं और अन्य के विद्रोहों को दबाया तथा अफगानों की तेजी बाह्य शक्ति को अपने रास्ते से पूरी तरह समाप्त किया।

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

अकबर को परिस्थितिजन्य कारणों के चलते मात्र 13 वर्ष 4 माह की आयु में ही मुगलिया ताज पहनना पड़ा। बैरम खाँ के सहयोग से उसने पानीपत की तीसरी लड़ाई में (5 नवम्बर 1556 ई.) में अफगान हेमू की सेना को पराजित कर अप्रतिम पराक्रम का परिचय दिया।

अकबर की शिक्षा उतनी नहीं हुई परंतु जिस सूझबूझ एवं विवेक का परिचय आगे चलकर दिया वह उल्लेखनीय है।

* मुगल शासक की राज्य विस्तार की नीति, सैन्य संगठन, प्रशासनिक दक्षता, शासन प्रणाली, राजपूतों के साथ संबंध तथा धार्मिक उदारता व समाज सुधार के लिये किये गये महत्वपूर्ण व विशेष कार्य अकबर को महान सम्राट के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

① राज्य का विस्तार –

सबसे पहले अकबर ने अपने साम्राज्य विस्तार में आने वाले सभी कांटों को समाप्त कर दिया।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

→ पानीपत की लड़ाई में अफगानों को हराया
→ उज्बेक तथा मिर्जा विद्रोही गुटों से राज्य को सुरक्षित किया

• अजमेर पर अधिकार कर अकबर ने मालवा के बाजबहादुर पर जीत हासिल की यहाँ अकबर की सेना का नेतृत्व आदम खाँ ने किया। (1562 ई. में)

• इसके बाद गढ़कंटगा राज्य हासिल करने के लिये आसफ खाँ के नेतृत्व में सेना भेजी।

• राजस्थान में चित्तौड़ का दुर्ग, रणथम्भौर, जैसलमेर राज्य, बीकानेर राज्य भी अकबर ने अपने साम्राज्य में मिला लिये राजस्थान में मेवाड़ को छोड़कर सभी राज्य अकबर के अधीन हो गये।

• गुजरात विजय —
अकबर ने गुजरात के लिये स्वयं मोर्चा लेकर गुजरात के बंदरगाहों को जीता। इसका लाभ यह हुआ कि - देश के आयात-निर्यात पर नियंत्रण स्थापित हुआ व पुर्तगालियों के देश-विजय के मंसूबे असफल हो गये।

- **बंगाल विजय** – यह अकबर की उत्तर भारत से अफगानों का अंत करने वाली विजय थी

सेना का नेतृत्व – खान-ए-खानन मुनैम खाँ

बंगाल में शासक – दाऊद खाँ (अफगान)

- कुछ वर्षों के विराम के बाद अकबर ने पश्चिमोत्तर भारत की ओर रुख किया जिसमें काबुल, सिंध विजय शामिल है।
- सोलहवीं सदी के अंत तक अकबर ने दक्षिण में अहमद नगर तक मुगल नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

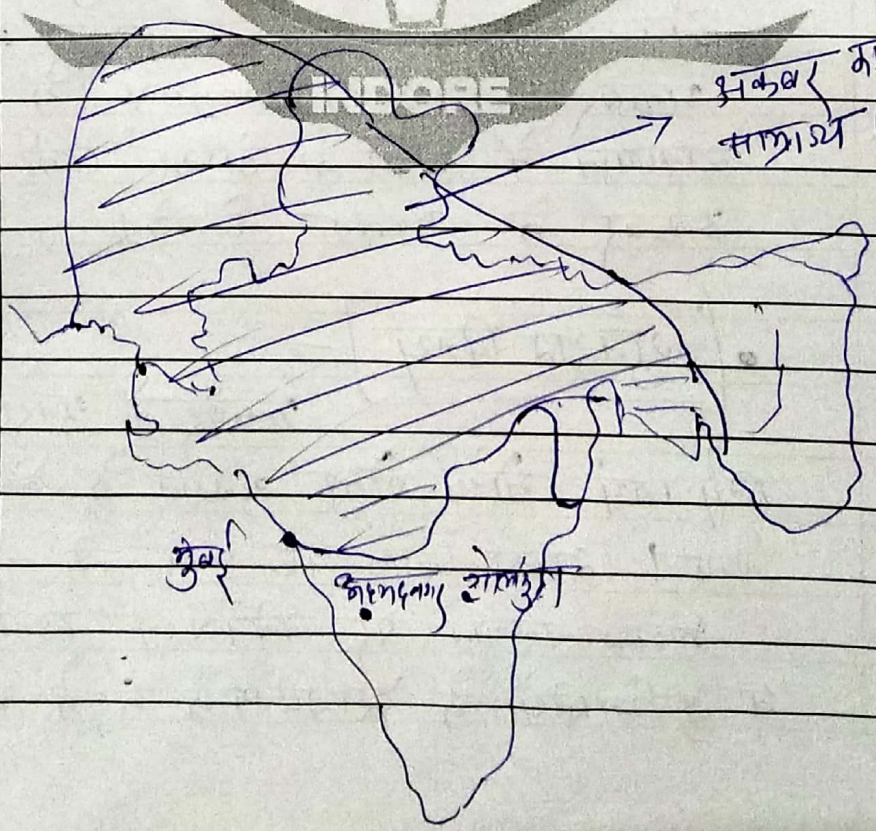

Scanned with CamScanner

(2) प्रशासनिक कुशलता –

शेरशाह के समय से जारी किसानों की अहितकारी भूराजस्व व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन कर नई ~~कुछ~~ वार्षिक भूराजस्व प्रणाली ~~स्थापित~~ लागू की जिसे दहसाला प्रणाली कहते हैं।

इसमें ज़ब्ती प्रणाली का प्रयोग राजस्व निर्धारण हेतु ~~किया~~ करते हैं। ज़ब्ती की वैकल्पिक व्यवस्था बँटाई या गल्ला बख्शी भी किसानों के लिये उपलब्ध थी।

→ कानूनगो व करोरी नामक अमले दहसाला के क्रियान्वयन हेतु जिम्मेदार थे।

(3) किसानों से पितृवत व्यवहार –

अकबर ने अमलों को आदेश दिया कि वे किसानों की ज़रूरत के समय ~~में~~ उदार रहें तथा ~~तथा~~ सुविधा कर आसान किस्तों में वसूली करें।

(4) शक्तिशाली सेना का निर्माण –

इतने विशाल साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण हेतु सेना की आवश्यकता पर

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

बल देते हुये सैन्य संगठन में मनसबदारी प्रथा को लागू किया।

सभी प्रकार के विद्रोहों व कबायिली संगठन को कमजोर करते हुये मिश्रित टुकड़ी का नियम लागू था जिसमें मुगल, पठान, राजपूत, हिन्दुस्तानी सैनिक 4 जातियों के सवार होते थे।

* मनसबदारी प्रथा की विशेषता यह थी कि अकबर मनसबदारों को जब भी वेतन के रूप में नकद के बदले जागीर देता था तो जागीर पर उसका वंशानुगत हक नहीं होता था।

(5) अकबर के चारित्रिक गुण :-

(1) बैरम खाँ के विद्रोह व उसके बाद भी अकबर ने उसके पुत्र व पत्नी के साथ मानवीय व्यवहार किया।

(2) मालवा के शासक बाजबहादुर को मनसबदार नियुक्त किया।

(3) गढ़कटंगा राज्य बाद में संग्रामशाह के छोटे भाई चंद्रशाह को लौटा दिया।

Scanned with CamScanner

(4) चित्तौड़ विजय के दौरान सेनापति जयमल और पत्ता की वीरता से प्रेरित होकर आगरा किले के द्वार पर मूर्तियाँ स्थापित कराई।

(5) विभिन्न धर्मों के साथ सहिष्णुता का परिचय दिया।

(6) उदारवादी धार्मिक नीति –

अकबर ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सद्भावना बढ़ाने की कोशिशें की

→ सेना में महत्वपूर्ण पद हिंदू राजाओं को दिये। जैसे – मानसिंह, राजा बीरबल।

→ धार्मिक आडम्बरों के बजाय प्रेम और भक्ति आधारित धर्म पर बल दिया

→ गैर मुस्लिमों पर "जजिया कर" को समाप्त किया

→ अकबर ने हिंदू तीर्थ स्थलों पर स्नान के लिये कर को समाप्त किया

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कुल मिलाकर सभी नागरिकों को समान अधिकार देने वाले साम्राज्य की नींव तैयार की। जो आज भी प्रासंगिक है जिसे हमारा संविधान भी मान्यता देता है।

(9) सामाजिक सुधार कार्य -
अकबर ने कई सामाजिक व शैक्षिक सुधार कार्य किये जैसे -
→ सती प्रथा समाप्ति
→ विधवा विवाह को कानूनी समर्थन
→ बहुविवाह/अत्याधिक विवाह पर रोक
→ विवाह की सीमा तय की
→ शराब पर प्रतिबंध

(10) राजपूतों के साथ संबंध -
वैवाहिक संबंध नीति, पुरस्कार एवं दण्ड नीति, उदारता के जरिये राजपूतों के साथ संबंधों को मधुर व मजबूत किया।

ये सभी विशेषताएं आज के समय में भी प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है अतः इस संदर्भ में मुगल सम्राट अकबर एक महान शासक कहलाने योग्य है।

INDORE

Scanned with CamScanner